ग़ज़ल 13

-रविशंकर श्रीवास्तव

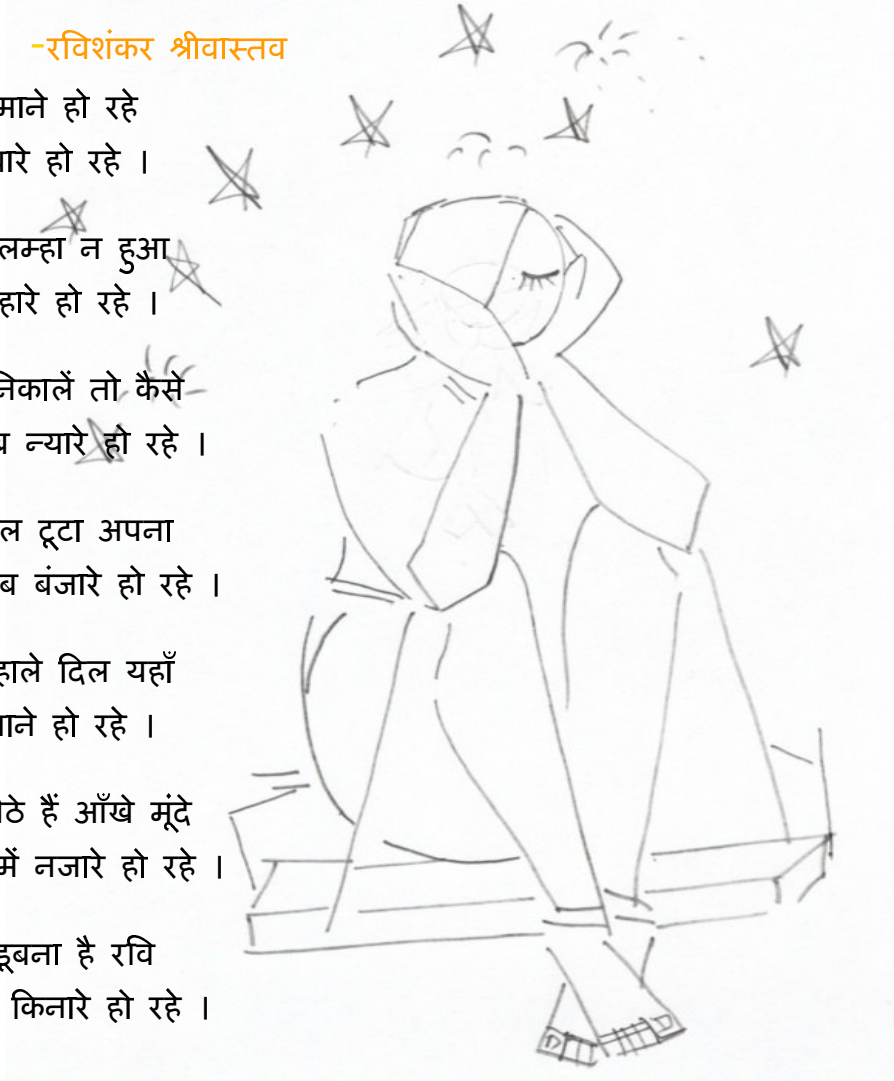

रिश्ते अब बेमाने हो रहे
जख्म भी प्यारे हो रहे ।

तुझसे मिले लम्हा न हुआ
और हम तुम्हारे हो रहे ।

दिले गुबार निकालें तो कैसे
अश्क भी अब न्यारे हो रहे ।

क्या हुआ दिल टूटा अपना
वो भी तो अब बंजारे हो रहे ।

किससे कहें हाले दिल यहाँ
अपने तो बेगाने हो रहे ।

तसव्वुर में बैठे हैं आँखे मूंदे
भरी दुनिया में नजारे हो रहे ।

मुहब्बत तो डूबना है रवि
फिर वो कैसे किनारे हो रहे ।

raviratlami@mantrafreenet.com
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,
रतलाम म.प्र. 457001